

## पद १४०

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

जग रूठा तो रूठन दे । एक तुम मत रूठो मेरे रामजी ॥ध्रु.॥ एक  
चंद्र का प्रकाश भये तब । उडुगण से मोहे क्या काम जी ॥१॥  
कल्पवृक्ष ने छत्रधरे तब । और वृक्ष की क्या छांव जी ॥२॥ कामधेनु  
ने दुग्ध पिलाया । और बसत धेनु धाम जी ॥३॥ मानिक कहे  
सागरमो न्हाये । तब तीरथ का क्या काम जी ॥४॥